ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14 Vol.-5, No.-I, PP-111-113, YEAR JUNE 2016

संगीत और समाज

❑ डॉ0 निष्ठा शर्मा

भारतीय शास्त्रों में वर्णित कलाओं में भारतीय संगीत एक अमूल्य देन है। किसी भी कला की व्याख्या के लिए उसका इतिहास एवं परम्परा विशेष रूप से आवश्यक है। यह दोनों ही चीजें हमारे संगीत पर लागू होती हैं। भारतीय संगीत का इतिहास सृष्टि के साथ जुड़ा हुआ है और रही परम्परा की बात तो वह भी समय के साथ उतनी ही पुरानी है। यही कारण है कि संगीत हमारे आध्यात्मिक और भावात्मक जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है किन्तु संगीत के इस गौरवशाली अतीत का स्तुतिगान ही काफी नहीं है – इसके गुणों, उसकी उपादेयता का विश्लेषण भी अत्यावश्यक है।

पाँच तत्वों द्वारा जीव का निर्माण होता है। इन्हीं तत्वों के अणुओं से नाद स्पंदित होता रहा है। इसलिए 'नाद' को चराचर ब्रह्म की उपाधि दी गई है। इस 'नादब्रह्म' का सम्बन्ध जीवात्मा से जुड़ा है। इसीलिए आत्मा द्वारा निष्पादित मधुर 'नाद' का सम्बन्ध दूसरे आत्म–तत्व के साथ जुड़ जाता है। यह नाद तरंगे हृदय–स्थल को स्पर्श करते हुए मानव को अनुपम आनन्द से विभोर कर देती है। यह नाद–ब्रह्म एक ही है किन्तु मन्द्र, मध्य और तार रूप को स्थान के प्रभाव से धारण करता है यथा नाभि से हृदय पर्यन्त मन्द्र, हृदय से कण्ठ पर्यन्त मध्य और कण्ठ से मस्तक पर्यन्त तार संज्ञक बन जाता है जिसकी शक्ति एक–एक से द्विगुणित होती जाती है। नाद द्वारा शरीर के अन्दर 22 श्रुतियों का अनुसन्धान हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि तपोजयी साधकों के चिन्तन व मनन का ही परिणाम है। आज विश्व में जो भारतीय संगीत की यशोगाथा गूँज रही है, वह हमारे पूर्वजों की तपश्चर्या की ही देन हैं भारतीय शास्त्रीय संगीत में जो दिव्य शक्ति है, वह केवल मनोरंजन हेतु नहीं अपितु उसकी प्रचंड शक्ति आत्मा का साक्षात्कार करने वाले स्वरों मेंहै। संसार में हर व्यक्ति आनन्द की खोज में लगा हुआ है जो कि जीवन भर जारी रहती है– किन्तु अन्तिम सत्य तो विशुद्ध आनन्द है जो कि ''नाद–योग'' अर्थात् संगीत द्वारा शीघ्रता से प्राप्त होता है। इसीलिए संगीत से प्राप्त आनन्द 'ब्रह्मानन्द–सहोदर'' माना जा सकता है। सीधे शब्दों में यदि कहे तो अपने हृदय की समस्त वृत्तियों को ईश्वर को समर्पित करना ही भक्ति कहलाती है। भक्ति में तन्मयता होती है और इस तन्मयता को बनाये रखने का एकमात्र साधन है– संगीत! जिसकी सुनियोजित श्रृंखलाबद्ध लय और स्वरों की गति से अखण्ड रस प्रवाह सम्भव हो पाता है और व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यवधानों से बचकर अपने आराध्य में एकरस हो जाता है। हमारे वेदों, उपनिषदों आदि ग्रन्थों का अस्तित्व इसी नाद पर अवलम्बित है। तुलसी, सूर व अन्य भक्त कवियों की रचनायें हमें आज भी विशुद्ध ईश्वरीय आनन्द से सराबोर कर देती है कारण – ये भक्त कवि मात्र उत्कृष्ट कवि ही नहीं थे, उच्चकोटि के वांग्गेयकार भी थे। इस प्रकार आध्यात्मिक सत्य को प्रति प्रेरणा देने की सामर्थ्य मात्रा संगीत में ही है। आध्यात्मिक आनन्द हमें उच्चतर भावों के लिए प्रेरित करता है। मानवता का पाठ पढ़ाता है। असभ्य को सभ्यता का और संकीर्ण हृदय को विश्व बन्धुत्व का संदेश देता है। कलाकार और श्रोता कहीं के भी हो किसी भी जाति अथवा धर्म से सम्बन्ध रखते हों, स्वरों के भावों से दोनों ही एक रूप हो जाते हैं। जाति, धर्म, स्थान से परे संगीत राष्ट्रीय एकता व विश्व–बंधुत्व के उद्देश्य से उपयोगी है। राष्ट्रीयता का अर्थ जो किसी समुदाय से व्यक्ति को भावनात्मक रूप से इसलिए जोड़ती है कि व्यक्ति

❑ असि0 प्रोफेसर–संगीत गायन, महिला महाविद्यालय (पी0जी0), कानपुर, (उ0प्र0), भारत

भाषा, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास आदि कारणों से स्वयं को उस समुदाय का अभिन्न अंग समझने लगता है, और कुछ शास्त्रीय संगीत जैसी विशिष्टताओं के कारण सुदृढ़ता से जुड़ जाता है और एकजुटता होने से स्वाभाविक रूप से प्रसन्नता का अनुभव करता है। अतः संगीत के द्वारा राष्ट्रीय एकता का अर्थ उस मनोवैज्ञानिक संवेगात्मक भाव से है जो अन्य भिन्नताओं के बावजूद एक दूसरे को जोड़ता है। कर्नाटक संगीत व हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अन्तर होते हुए भी उनके मूलभूत आधार एक हैं। अतः दोनों ही हमें भारतीयता का एहसास कराते हैं। यही नहीं सलामत अली, नज़ाकत अली जैसे कलाकारों का संगीत राजनैतिक दूरियों को भी मिटा देता है।

संगीत एक यौगिक विद्या है। संगीत की यह यौगिक शक्तियाँ शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालती हैं। सामान्य जन की दृष्टि में संगीत का कार्य है – चिन्ताओं से मुक्ति। मनुष्य को कार्य प्रवण बनाने के लिए संगीत एक उत्तेजक उर्जा का कार्य करता है। प्राचीन काल में सामवेद के मन्त्रों से असाध्य रोगों का उपचार किया जाता था। यही नहीं उत्तम कृषि के लिए भी मंत्रों का गायन किया जाता था। आज वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करते है कि संगीत के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति को वशीभूत किया जा सकता है तथा पेड़–पौधों तक की उत्पादक शक्ति अधिकतम सीमा तक पहुंचायी जा सकती है। पिछले दिनों अन्नामलाई विश्वविद्यालय के वनस्पति–शास्त्र विभाग के शोधों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि ध्वनि'–तरंगों का वनस्पतियों के फलने–फूलने पर गहरा प्रभाव पड़ता है। गेंदे के पौधे की ऊँचाई व उत्पादन क्षमता वायलिन पर बजाये गये मायामालवगौड़ राग से 40% अधिक हो गयी। मिर्च के पौधे पर वीणा द्वारा सिमेन्द्रमध्यम राग से 100% की वृद्धि पायी गयी। गन्ने के पौधे को 'प' स्वर बजाकर सुनाने से 60% की वृद्धि पायी गयी। संगीत मार्तण्ड पं0 ओंकारनाथ ठाकुर का कहना था – ''शरीर में सात धातुऐं व सात रंग हैं, वही सात रंग स्वरों के हैं, वही रंग सूर्य की किरणों में हैं। जब सूर्य की सप्तरंगी किरणों से प्रभावित जल से रोग दूर भागते हैं तो क्या सात स्वरों से ऐसा नहीं हो सकता ? हमें जानना होगा कि कौन सी धातु शरीर में कम हो गयी ? उसका क्या रंग है ? उसी रंग के स्वर का संगीत रोगी को सुनाया जाये तो वह स्वस्थ होगा। पंडित जी का कहना था कि उन्होंने ऐसे व्यक्ति को भी सुला दिया जो मारफिया के इंजेक्शन से भी नहीं सो पा रहा था। मुसोलनी की आँखों में संगीत द्वारा नींद लाना पंडित जी के जीवन की प्रसिद्ध घटना है। कफ के तथा दमा के रोगों में राग भैरवी, मानसिक चंचलता और क्रोध की स्थिति में राग मल्हार व जैजेवंती तथा रक्तचाप की स्थिति में राग आसावरी का सफल प्रभाव देखा गया है। उदर सम्बन्धी रोगों में पंचम राग तथा पागलपन की स्थिति में राग खमाज लाभदायक सिद्ध हुआ। श्री राग से पाचन क्रिया ठीक रहती है।इसके अतिरिक्त शरीर सहज और सामान्य रूप से कार्य करें, इसके लिए राग तोड़ी का प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है।

मानसिक रूप से विकलांग लोगों के उपचार में भी संगीत बहुत मददगार साबित हुआ है। ऐसे लोगों के मन व मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित करने में संगीत मदद करता है। मैने अपने स्वयं के अनुभव से यह ज्ञात किया कि मंदबुद्धि बच्चों की शिक्षा हेतु संगीत सर्वाधिक प्रभावी साधन है। संगीत के माध्यम से वे चीजों को सरलता से सीखते हैं तथा संगीत के माध्यम से उनकी स्मरण शक्ति तथा धारणा शक्ति का विकास होता है तथा उनके मस्तिष्क में सचेतनता बढ़ती है। उनके आत्मविश्वास व उत्साह में वृद्धि होती है। मंदबुद्धि ही नहीं अपितु सामान्य बच्चों की शिक्षा में संगीत का प्रभाव देखा गया है – संगीत के माध्यम से वे शीघ्रता व सरलता से पाठ स्मरण कर लेते हैं। वे अधिक उत्साहित होते हैं और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

सत्य तो यह है कि संगीत मानव की भावात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। यह भावाभिव्यक्ति एवं संवेदनशीलता ही उसे शारीरिक व मानसिक रूप से समृद्ध कर अनन्त आनन्द की ओर ले जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास
2. श्रीवास्तव, डॉ0 धर्मावती प्राचीन भारत में संगीत
3. परांजपे, डॉ0 शरच्चन्द्र भारतीय संगीत का इतिहास
4. सिंह, लावण्य कीर्ति, संगीत संजीवनी
5. शर्मा, डॉ0 मनोरमा, म्यूजिक थेरेपी, संगीत 1996
6. गर्ग, सम्पादक लक्ष्मी नारायण, संगीत निबन्धावली
7. संगीत, अप्रैल 1988

*****